ईश्वरप्राप्ति हेतु 'साधना' : खण्ड १

आधुनिक विज्ञानसे श्रेष्ठ अध्यात्म !

(अध्यात्मसम्बन्धी भ्रान्तियोंके समाधानसहित)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९६, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

जुलाई २०२४ तक ३६६ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९७ लाख २९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

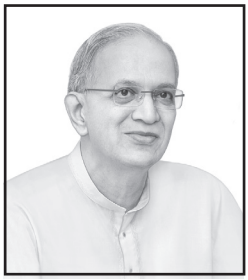

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २६.७.२०२४ तक १२८ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिंदुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना का उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार हेतु 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स के संसद में सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ।।
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ।। – जयंत बाळाजी आठवले

१७.५.१९९८

पू. संदीप गजानन आळशीजीका परिचय

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. **व्युत्पत्ति एवं अर्थ** ८

२. **समानार्थी शब्द** ९

३. **अध्यात्मका अधिकारी** ९

४. **अध्यात्मके विषयमें भ्रान्तियां** १०

* साधनासम्बन्धी भ्रान्तियां १६
* वृद्धावस्थामें साधना करनेका विचार १६
* अपने मनानुसार, मनोनीत देवता या सन्तकी साधना करना १७
* विवाह न करनेका विचार १७
* व्यवहारमें बाधा उत्पन्न होनेकी आशंका १८
* उन्नत पुरुषोंसम्बन्धी भ्रान्तियां १९
* अध्यात्म सिखानेवालोंसम्बन्धी भ्रान्तियां २०
* गुरुसम्बन्धी भ्रान्तियां २०

५. **अध्यात्मसम्बन्धी भ्रान्तियोंका कारण** २१

* समाजके बडे लोगोंद्वारा भ्रमित किया जाना २१

* प्रचारमाध्यमोंद्वारा अज्ञानका प्रसार २२
* विश्वविद्यालयोंद्वारा ज्ञानप्रसारपर प्रतिबन्ध २२
* विश्वविद्यालयोंद्वारा अज्ञानका प्रसार २३
* सरकारका अप्रत्यक्ष विरोध २३
* बुद्धिप्रमाणवादियोंका अज्ञान एवं अन्धश्रद्धा २४

६. अध्यात्मका महत्त्व २७
* सर्वज्ञता देनेवाला विषय २८
* जीवके लिए जन्म-मृत्युके चक्रसे छूटनेका अवसर २९
* सकाम एवं निष्काम साधनामें उपयुक्त २९

७. मानवकी अध्यात्ममें रुचि क्यों होती है ? ३०

८. अन्य शास्त्र एवं अध्यात्मशास्त्र ३१
८ अ. मनसे सम्बन्धित शास्त्र एवं अध्यात्मशास्त्र ३१
८ आ. अन्य विषय और अध्यात्म में चिरन्तन सत्यकी मात्रा ३५
८ इ. विज्ञान एवं अध्यात्मशास्त्र ३५
* विज्ञान अध्यात्मकी ही एक शाखा है ३५
* विज्ञानके योग्य विकासके लिए पोषक हिन्दू धर्म ३६
* विज्ञानसे हानि अथवा उसकी मर्यादाएं ३९
* विज्ञानान्तर्गत जिज्ञासा व अध्यात्मांतर्गत श्रद्धा परस्परपूरक ४५
* विज्ञान एवं अध्यात्म में उत्तम समन्वय आवश्यक ५१
* आधुनिक वैज्ञानिक यंत्रोंसे सिद्ध हुई अध्यात्मकी श्रेष्ठता ! ५२

९. अध्यात्मके अध्ययनमें बाधाएं ५३
* नास्तिकता * निरर्थक बुद्धिप्रमाणवाद ५७

卐 अध्यात्मसम्बन्धी आलोचनाएं / अनुचित विचार एवं उनका खण्डन ६६

भूमिका

अधिकांश लोगोंको, 'सुख राई समान एवं दुःख पर्वत समान' लगता है। कलियुगमें सामान्य मनुष्यके जीवनमें सुख लगभग २५ प्रतिशत एवं दुःख ७५ प्रतिशत होता है । केवल मनुष्यकी ही नहीं, अपितु अन्य प्राणिमात्रोंकी भागदौड भी अधिकाधिक सुखप्राप्तिके लिए ही होती है । इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति पंचज्ञानेन्द्रिय, मन एवं बुद्धि द्वारा विषयसुख भोगनेका प्रयत्न करता है; परन्तु विषयसुख तात्कालिक एवं निम्न श्रेणीका होता है, तो दूसरी ओर आत्मसुख, अर्थात आनन्द चिरकालीन एवं सर्वोच्च श्रेणीका होता है । अध्यात्म वह शास्त्र है, जो आत्मसुख प्रदान करता है । 'सुखं न विना धर्मात् तस्मात् धर्मपरो भवेत्।' अर्थात 'खरा सुख (आनन्द) धर्मपरायण हुए बिना नहीं मिलता'; इसीलिए धर्मपरायण होना चाहिए । साधनाद्वारा आत्मसुख प्राप्त करनेसे लौकिक व पारलौकिक सुखका आनुषंगिक फल भी प्राप्त होता है ।

अध्यात्म इतना महत्त्वपूर्ण होते हुए भी खेद है कि अनेक लोग अध्यात्म शब्दके अर्थसे भी अनभिज्ञ रहते हैं । इसीलिए अत्यल्प लोग अध्यात्म जैसे सर्वोच्च आनन्द एवं सर्वज्ञता देनेवाले विषयकी ओर उन्मुख होते दिखाई देते हैं । कोई यदि समझ ले कि 'विषयसुख'की तुलनामें 'आनन्द' अनन्त गुना अधिक आनन्ददायी है, तो वह विषयसुखकी अपेक्षा आनन्दप्राप्तिके लिए ही प्रयत्न करेगा । लोगोंसे ऐसे प्रयत्न हों, इसी उद्देश्यसे यह ग्रन्थ लिखा गया है।

केवल बौद्धिक स्तरपर अध्यात्मको नहीं समझा जा सकता; यह तो प्रत्यक्ष कृत्यद्वारा अनुभूत करनेका विषय है । श्री गुरुचरणोंमें हमारी प्रार्थना है कि इस ग्रन्थको पढकर कुछ लोग साधना आरम्भ करें एवं साधनासे उनमें अन्तर्यामी आनन्द शीघ्र प्रवाहित हो । – **संकलनकर्ता**

नामजपके विषयमें मार्गदर्शन करनेवाला सनातनका ग्रन्थ !

नामजपका महत्त्व एवं लाभ